International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(2): 07-09

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(2): 07-09
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-01-2021
Accepted: 09-02-2021

राकेश कुमार
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
राकेश कुमार
शोधछात्र, संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

महाकवि भारवि विरचित ''किरातार्जुनीयम्'' महाकाव्य में निहित अर्जुन का चरित्र–चित्रण

राकेश कुमार

प्रस्तावना

बृहत्त्रयी काव्यों में अन्यतम किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के रचयिता भारवि का नाम महाकवियों में बड़े आदर से लिया जाता है। इनका काव्य महाकाव्य के सारे लक्षणों से परिपूर्ण है। इनकी रचना में अर्थगौरव पूर्णरूप से पाया जाता है। जैसा कि प्रसिद्ध है– ''भारवेअर्थगौरवम्'' इन्होनें अपने पात्रों के मुख से भी अर्थगौरव की प्रशंसा की है। आरम्भ में ही ''स सौण्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्'' औदार्यम् अर्थ गाम्भीर्यम्'' कहा है।

द्विषां विद्याताय विद्यातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।
स सौण्ठवौन्दार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।। [01]

द्वितीय सर्ग में भीम की उक्ति की प्रशंसा करते हुए युधिष्ठिर ने ''न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' कहा है–

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं कचित्।। [02]

भारवि के किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की कथा का प्रारम्भ घूतक्रीड़ा में पराजित हुये पाण्डवों के द्वैतवन में निवास काल से होता है। प्रथम सर्ग के प्रारम्भ में ही विध्न विनाश हेतु से भारवि ने मंगलार्थ सूचक श्री शब्द का प्रयोग करते हुए कथा का प्रारम्भ युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त वनेचर के आगमन से किया है।

इस काव्य के धीरोदात्त नायक अर्जुन है। किरात वेष धारी भगवान शंकर प्रतिनायक हैं। उनके द्वारा दूत की उक्ति एवं अर्जुन का पराक्रम उद्दीपन विभाव है। नायक प्रतिनायक का प्रहार प्रतिहार आदि सच्चारीभाव है। उत्साह स्थायीभाव है। अट्ठारह सर्गों में विभक्त यह महाकाव्य वीर रस प्रधान होने पर महाकाव्यों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

अर्जुन से सम्बन्धित विशेषतायें जो इस महाकाव्य को अलंकृत करती हैं। इस प्रकार हैं–

जब अर्जुन इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने के लिए जा रहे थे तब उनको पुनः जागृत करने के लिए द्रौपदी ने अपने साथ आपबीती की सारी बातों को अर्जुन के समक्ष कहा ऐसा कहने के बाद अर्जुन सूर्य के समान प्रज्वलित हो उठे ओर बहुत क्रोध उत्पन्न करने लगे और दृढ़ निश्चय किया कि मैं अपनी तपस्या को सफल करके ही वापिस आऊँगा और अपने प्रतिशोध का बदला लूंगा। मानों बहुत दिनों के अपमान ने ताजा–सा होकर क्रोध को भड़का दिया हो।

उदीरितां तामिति याज्ञसेन्या नवीकृतोद्ग्राहितविप्रकाराम्।
आसाध वाचं स भृशं दिदीपे काण्ठामुदीचीमिव तिग्मरश्मिः।। [03]

महाकवि भारवि ने अर्जुन को इस प्रकार दिखाया है कि काव्य की कथा अर्जुन के चारों ओर घूमती रहती है। कवि ने अर्जुन के रूप को एक भीषण शरीर धारण करने वाला बताया है। जब द्रोपदी के वचन सुनकर अर्जुन उत्तर की दिशा में जाते हैं तो मानों ऐसा लगता है कि शत्रुओं को अपने सामने देख रहे हों, ऐसे धौम्य पुरोहित द्वारा मन्त्र पढ़कर जिसके शस्त्रास्त्र सुसज्जित कर दिये गये हैं। जैसे हिंसक श्येन यज्ञ में अभिचार में लगाया गया मन्त्र सुन्दर होता हुआ भी भयानक हो जाता है।

अथाभिपश्यत्रिव विद्विषः पुरः पुरोधसारोपितहेतिसंहतिः।
बभार रम्योऽपि वपुः स भीषणं गतः क्रियां मन्त्र इवाभिचारिकीम्।।[04]

अर्जुन एक ऐसे व्यक्ति थे, कि अपने कार्य को मन, तन, धन व पूरे दिल से करते थे, वे इन्द्रकील पर्वत पर विधिपूर्वक अपने मन को एकाग्र कर के तपस्या करने लगे लेकिन खेद प्रकट नहीं हुआ, क्योंकि धीर पुरूषों को संसार की कोई भी वस्तु उदिग्न नहीं कर सकती है।

प्रणिधाय तत्र विधिनाथ धियं दधतः पुरातनमुनेमुनिताम्।
श्रममादधावसुकरं न तपः किमिवावसादकरमात्मवताम्।।[05]

महाकवि भारवि ने अर्जुन के सतकर्मों पर प्रकाश डालते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपने सतकर्मों को कर के आगे बढ़ते रहने को कहा है। जिस प्रकार से एक चन्द्रमा अपनी स्वच्छ कलाओं से अन्धकार को दूर करता हुआ प्रतिदिन कलाओं से बढ़ता जाता है। ठीक उसी प्रकार से विमल (निर्मल) अर्जुन अपनी इन्द्रियों को वश में कर के पवित्र मैत्री आदि गुणों से पाप मय अज्ञान को नष्ट करता हुआ अर्जुन सत्कर्मों से प्रतिदिन बढ़ने लगा।

शमयन्धृतेन्द्रियशमैकसुखः शुचिभिर्गुणैरधमयं स तमः।
प्रतिवासरं सुकृतिभिववृधे विमलः कलाभिरिव शीतरूचिः।।[06]

अर्जुन ने हिंसा को बहुत दूर रख कर सच्चे मन से जप और प्रणाम से देवराज इन्द्र की उपासना करते हुए स्वाभाविक रूप से क्षत्रिय तेज व तपोजन्य तेज को एक साथ धारण करके इन्द्रकील पर्वत पर विजय तपस्या करने लगा।

मनसा जपैः प्रणतिभिः प्रयतः समुपेयिवानधिपतिं स दिवः।
सहजेतरौ जयशमौ दधती बिभराम्बभूव युगपन्महसी।।[07]

एक चरित्र व्यक्ति को महान तथा प्रशंसादायक बना देता है। क्योंकि महाकवि भारवि ने सचित्र चरित्र वर्णन करते हुए अर्जुन को कहा है– कि जब इन्द्र के वनेचरों ने अर्जुन को तपस्या करते हुये इन्द्रकील पर्वत पर देखा तब वनेचरों ने अर्जुन की प्रशंसा करते हुए महाराज इन्द्र से कहा– भयानक सर्प के समान भुजा वाला वह शत्रुओं को भय देने वाला विशाल धनुष को धारण करने वाला, निर्मल चरित्र से सभी सचरित्र ऋषियों को जीत रहा है।

स बिभर्ति भीषणभुजङ्गभुजः पृथु विद्विषां भयविधायि धनुः।
अमलेन तस्य धृतसच्चरिताश्चरितेन चातिशयिता मुनयः।।[08]

अर्जुन एक ऐसा महान बल से युक्त प्राणी है जो चाहे कितना भी कार्य कर ले लेकिन थकावट महसूस नहीं करता है। परिश्रम के अपने सारे कार्य पूर्ण करने के बाद भी थकावट युक्त नहीं होता है। उसका विशाल आकार उसकी विजयशालिता को प्रकट करता है। कोई भी व्यक्ति शान्ति धारण करने पर भी उसके प्रथम समागम के समय प्रभाव से भयभीत हो जाता है।

उरू सत्तवमाह विपरिश्रमता परमं वपुः प्रथयतीव जयम्।
शमिनोऽपि तस्य नवसंगमने विभुतानुषड्गि भयमेति जनः।।[09]

जब किसी व्यक्ति की इन्द्रियाँ उस की रक्षा करती हैं तो वह व्यक्ति अपनी जीत सुनिश्चित कर लेता है। कवि ने इस श्लोक में इसी बात को कहा है। अर्जुन ने अपनी इन्द्रियों को अपने मन से ओर मन को अपनी विजयशीलता तपस्या से वश में कर लिया हो ऐसा लगता है क्योंकि तीनों लोकों को जीतने वाला वह अर्जुन ही है। जिससे शत्रु विजय प्राप्त करने में असमर्थ है। अतः अर्जुन अपनी विजयशीलता तपस्या को पूर्ण करने में पूरी तरह निपुण है।

प्रभवति न तदा परो विजेतुं भवति जितेन्द्रियता यदात्मरक्षा।
अवजितभुवनस्तथा हि लेभे सिततुरगे विजयं न पुष्पमासः।।[10]

जब अर्जुन इन्द्रकील पर्वत को अपनी विजयशीलता तपस्या से शोभित कर रहे थे तो इन्द्र जी ने उनकी परीक्षा लेने के लिए जिन अपसराओं को भेजा था वे अपसराऐं अपनी सारी कोशिश करने के बाद भी अर्जुन को लुभा नहीं सकी, वे उनके समक्ष दीनतापूर्वक बोली कि हमने सारी लज्जा त्याग दी, यहाँ तक की हम रोई भी इससे अधिक हम क्या कर सकती हैं। क्योंकि समागम के लिए कुपित प्रियतम को मनाने के लिए साधनों की सीमा यहीं तक हैं।

करूणमभिहितं त्रपा निरस्तातदभिमुखं च विमुक्तमश्रु ताभिः।
प्रकुपितमभिसारणेऽनुनेतुं प्रियमियती हाबलाजनस्य भूमिः।।[11]

अर्जुन एक धीर पुरूष है क्योंकि जब धीर पुरूष का हृदय अमर्ष से जलता रहता है उस समय उसके हृदय में सुखभोग का अवसर नहीं मिलता है। जो अपसराऐं अर्जुन की तपस्या में विध्न डालने आई थी सारे क्रिया–कलाप करने के बाद भी सफल नहीं हुई। क्योंकि अर्जुन का हृदय कौरवों के उत्पीड़न से जल रहा था इसलिए सुखभोग को अवसर मिलना सम्भव नहीं।

रूचिकरमपि नार्थवद्धभूव स्तिमितसमाधिशुचौ पृथातनुजे।
ज्वलयति महतां मनांस्यमर्षे न हि लभतेऽवसरं सुखाभिलाषः।।[12]

अर्जुन एक महापराक्रमी है क्योकि जब अर्जुन का युद्ध शंकर जी से चल रहा था तो अर्जुन ने जैसे ही शक्ति बाणों का प्रयोग किया सब प्राणी भागने लगे अर्जुन उनके पीछे–पीछे गये और ज्यादा नहीं मारा ना ही उनको पीड़ित किया क्योंकि महा–पराक्रमी भागते हुए को नहीं मारते।

त्रासजिहां यतश्चैतान्मन्दमेवान्वियाय सः।
नातिपीऽयितुं भग्नानिच्छन्ति हिमहौजसः।।[13]

अर्जुन अपने शत्रु को सामने देखकर उसकी कमियों पर प्रहार करते हैं। अर्जुन एक वीर योद्धा हैं। जब शंकर जी से युद्ध चल रहा था तो शंकर जी को आभास करा दिया था कि मुझे युद्ध में हराना आसान ही नहीं असम्भव है। अर्जुन शंकर जी से बहुत वीरता से युद्ध करने लगे देवता गण भी उनकी वीरता को देखकर चित्रलिखित कर रहे थे।

तद्गणा ददृशुर्भीमं चित्रसंस्था इवाचलाः।
विस्मयेन तयोर्युद्धं चित्रसंस्था इवाचलाः।।[14]

अर्जुन युद्ध में पूर्ण रूप से निपुण हैं। जब शंकर जी ने उस की बाण शक्ति को वितर्क कर दिया तो क्रोध युक्त होकर जीत की अभिलाषा रखते हुए शंकर के बाणों का उत्तर अपने बाणों से दिया, ऐसा लग रहा था कि ओले के रूप में जल के समान वृक्षो

को क्षत–विक्षत करने वाली पाषाणों की वृष्टि शंकर जी के ऊपर हो रही हो।

> स खण्डनं प्राप्य परादमर्षवान् भुजद्वितीयोऽपि विजेतुमिच्छया।
> ससर्ज वृष्टि परिरूग्णपादपां द्रवेतरेषां पयसामिवाश्ममनाम्।।[15]

भगवान शंकर अर्जुन की तपस्या से इतने प्रसन्न नहीं हुए जितने उस के महान धैर्य से और शौर्य से।

> तपसा तथा न मुदमस्य ययौ भगवान्यथा विपुलसत्त्वतया।
> गुणसंहतेः समतिरिक्तमहो निजमेव सत्त्वमुपकारि सताम्।।[16]

भगवान शंकर ने प्रसन्न होकर अर्जुन को आशीर्वाद दिया और कहा जाओ घर और शत्रुओं को जीतो, अर्जुन विजयलक्ष्मी से युक्त घर जाकर युधिष्ठिर को प्रणाम करते हैं। वह एक आज्ञाकारी भाई भी है। अपने बड़े भाईयों के चहेते भी हैं। अर्जुन, और अपने से छोटों को प्यार करते हैं।

> व्रज जय रिपुलोकं पादपद्मानतः सन्गदित इति शिवेन श्लाघितो देवसङ्घैः।
> निजग्रहमथ गत्वा सादरं पाण्डुपुत्रों धृतगुरूजयलक्ष्मीर्धमसूनुं ननाम।[17]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अर्जुन एक ऐसा व्यक्ति है। जिसमें एक कुशल यौद्धा होने के सारे गुण दिखाई देते हैं। वह जटिल परिस्थिति में भी कैसे अपने आप को सुरक्षित रख कर सफलता प्राप्त करता है। इस बात का पता तब ही लग जाता है जब वह इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करते समय भगवान शंकर से युद्ध करता है। अतः अर्जुन के अन्दर महत्वपूर्ण गुण मुख्य रूप से पाये जाते हैं। समय की धारा–प्रवाह को जानना, शत्रु की कमजोरियों को पहचानना, अपनी कमजोरियों को छिपा लेना, प्रतिज्ञावादी, महाबलशाली, प्रतापी, महत्वाकांक्षी, कर्मशील, सूर्य की तरह तेज प्रताप वाला और किसी को भी अपने आप से प्रभावित करना। अतः अर्जुन एक इन्द्र की भाँति है। जिस प्रकार से इन्द्र तेजस्वी आदि गुणों से परिपूर्ण है। ठीक उसी प्रकार से अर्जुन है।

संदर्भ

किरातार्जुनीयम्–हिन्दी व्याख्याकारः सन्दर्भ श्रीबदरीनारायणमिश्र
1. किरातार्जुनीयम् 01/03 पृष्ठ–04
2. किरातार्जुनीयम् 02/27 पृष्ठ–49
3. किरातार्जुनीयम् 03/55 पृष्ठ–96
4. किरातार्जुनीयम् 03/56 पृष्ठ–97
5. किरातार्जुनीयम् 06/19 पृष्ठ–159
6. किरातार्जुनीयम् 06/20 पृष्ठ–160
7. किरातार्जुनीयम् 06/22 पृष्ठ–161
8. किरातार्जुनीयम् 06/32 पृष्ठ–165
9. किरातार्जुनीयम् 06/35 पृष्ठ–167
10. किरातार्जुनीयम् 10/35 पृष्ठ–279
11. किरातार्जुनीयम् 10/58 पृष्ठ–291
12. किरातार्जुनीयम् 10/62 पृष्ठ–293
13. किरातार्जुनीयम् 15/06 पृष्ठ–432
14. किरातार्जुनीयम् 15/35 पृष्ठ–447
15. किरातार्जुनीयम् 17/60 पृष्ठ–510
16. किरातार्जुनीयम् 18/14 पृष्ठ–519
17. किरातार्जुनीयम् 18/48 पृष्ठ–537